

किशोरावस्था की छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं वैज्ञानिक रुचि का विश्लेषण

आरुषि, राणा

शोधार्थी, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

रूपरेखा

वर्तमान की जड़ अतीत में होती है। भारत का अतीत अत्यन्त गौरवशाली था। हमारी संस्कृति धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत थी। हमारे पूर्वजों ने जीवन को व्यापक दृष्टिकोण से देखा और 'सर्वभूत वितेरता' होना ही अपना कर्तव्य समझा। भारत में शिक्षा का प्रारम्भ अतीत में हो चुका था। हमारे प्रचीन शिक्षाविदों ने मानव जीवन की सार्थकता एवं सामाजिकता, व्यक्तिकता, राष्ट्रीयता, उपदेयता आदि अनिवार्य तत्वों की शिक्षा में उचित व्यवस्था की, जिससे समाज उत्तरोत्तर गतिशील बना रहे। समाज की गतिशीलता का आधार शिक्षा थी। शिक्षा ही वह साधन था, जो समाज की आवश्यकताओं, अनिवार्यताओं और मूल्यों को स्थापित, परिमार्जित तथा संरक्षित करने में समर्थ थी। समाज में होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव शिक्षा के स्वरूप पर पड़ता था। देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा के स्वरूप, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों, प्रविधियों आदि में बदलाव होता रहा है। जिससे कि समाज की संस्कृति और मूल्य पुनर्जीवित और विकसित होते रहे। अतएव देश विदेश में एक युग में ही शिक्षा का स्वरूप एक प्रकार का हो सकता है और दूसरे काल में दूसरे तरह का।

शब्दावली: सामाजिकता, व्यक्तिकता, राष्ट्रीयता, उपदेयता

प्रस्तावना

हमारी भारतीय शिक्षा बहुत विस्तृत और व्यापक है, यह शिक्षा प्रणाली किसी विदेशी प्रणाली पर आधारित नहीं थी अपितु भारत की पूर्ण झलक प्रतिबिम्बित होती है।

डॉ० थॉमस के अनुसार – “ऐसा कोई देश नहीं जहाँ ज्ञान के प्रति अनुराग इतने प्राचीन समय से प्रारम्भ हुआ हो।”

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय शैक्षिक विचार धारा के विकास के क्रम को 3 भागों में विभक्त कर सकते हैं –

1. प्राचीन शिक्षा, मध्यकालीन शिक्षा (मुस्लिम शिक्षा), आधुनिक शिक्षा। प्राचीन शिक्षा – प्राचीन शिक्षा को दो भागों में बाँटा गया है –

1. वैदिक शिक्षा
2. बौद्धकालीन शिक्षा।

उपलब्धि – इस अध्ययन में कक्षा 9वीं की अजमेर एवं जयपुर जिले की छात्राओं को लिया गया है। उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं वैज्ञानिक अभिरुचि का प्रभाव देखा गया है।

शैक्षिक उपलब्धियों के आधार पर व्यक्ति अपने जीवन का मार्ग निर्धारित करता है। मार्ग निर्धारण एक अच्छी या उच्च शिक्षा पर ही निर्भर करता है। आज के जटिल समाज में जटिल आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए शैक्षिक उपलब्धि पाना एक संघर्ष हो गया है।

किशोरावस्था – मानव जीवन के विकास की प्रक्रिया में किशोरावस्था का महत्वपूर्ण स्थान है। बाल्यावस्था समाप्त होती है और किशोरावस्था शुरू होती है। यह अवस्था युवावस्था से परिपक्वावस्था तक रहती है। यह सतत् प्रक्रिया है। इसे बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था के मध्य की सन्धि काल कहते हैं। इस अवस्था की विडम्बना होती है

दृ बालक स्वयं को बड़ा समझता है और बड़े उसे छोटा समझते हैं।

वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी का निर्माण – किसी भी प्रमापनी का निर्माण कई सोपानों से गुजरने के बाद

यथार्थ रूप में होता है। विज्ञान विषय के लिए अभिवृत्ति प्रमापनी निर्माण के निम्नलिखित सोपान हैं।

अभिवृत्ति का अर्थ – किसी भी व्यक्ति की वह विचारधारा, दृष्टिकोण, मत जो उसे किसी सम्प्रत्यय, विषय, पदार्थ, दृश्य की ओर आकर्षित करता है तथा वह उसके व्यवहार में परिलक्षित होता है का अभिप्राय अभिवृत्ति से लिया जाता है।

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत किशोरावस्था की छात्राओं की विज्ञान विषय के प्रति विचारधारा, दैनिक जीवन में घटने वाली विभिन्न घटनाओं के प्रति वैज्ञानिक सोच, चमत्कारी घटनाओं के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा अन्धविश्वास की अपेक्षा वैज्ञानिक मत की प्रतिस्थापना का अभिप्राय: वैज्ञानिक अभिवृत्ति से लिया गया है।

1. **गिलफोर्ड के अनुसार** – “अभिवृत्ति वह प्रवृत्ति है, जिससे हम किसी वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देते हैं, उसके प्रति विचार बनाते हैं।”
2. **आइजनेक के अनुसार** – “अभिवृत्ति व्यवहार की वह प्रवृत्ति है, जो कुछ वस्तुओं, क्रियाओं या अनुभवों के प्रति कार्य कर सकने में अपना नजरिया प्रस्तुत करती है।”

अभिवृत्ति मापनी की विधियाँ –

1. नरीक्षण विधि या तुलनात्मक विधि।
2. अभिवृत्ति परीक्षाएँ, फैंक्टोरियल परीक्षाएँ, अन्तरदर्शी परीक्षाएँ, यान्त्रिक अभिरुचि परीक्षण, लिपिक अभिरुचि परीक्षण।
3. प्रश्नावली निर्माण।
4. वस्तुनिष्ठ प्रश्न विधि।
5. प्रेक्षण रुचि के आधार पर।
6. स्वैच्छिक प्रश्नों का लेखा।

अभिवृत्ति मापनी की विशेषताएँ

- 1- अभिवृत्ति प्रमापनी वर्तमान स्थिति पर आधारित होती है। परन्तु उसमें भविष्य के संकेत निहित होते हैं। प्रमापनी के आधार पर यह भविष्यवाणी की जा सकती है कि व्यक्ति अमुक व्यवसाय में सफल होता या नहीं।
- 2- अभिवृत्ति प्रमापनी इस बात की ओर संकेत करती है कि व्यक्ति में अमुक उस कार्य को करने की योग्यता है या नहीं।
- 3- अभिवृत्ति प्रमापनी द्वारा वंशानुगत एवं अर्जित योग्यताओं का पता लगाया जाता है।
- 4- अभिवृत्ति प्रमापनी द्वारा व्यक्ति के व्यवहार तथा उसकी सफलता के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जाती है तथा अभिवृत्ति शैक्षणिक योग्यता, ज्ञान, वितरण की इच्छा, सहनशक्ति आदि गुणों का सम्मिक्षण होती है, यह पता लगाया जा सकता है।
- 5- अभिवृत्ति प्रमापनी से ही पता चलता है कि किशोरावस्था तक पहुँचते-पहुँचते व्यक्ति की अभिवृत्तियाँ स्थिर हो जाती हैं।

वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी के आयाम

1. दैनिक जीवन में वैज्ञानिक अभिवृत्ति।

2. शिक्षण अधिगम में वैज्ञानिक अभिवृत्ति।
3. अनौपचारिक वैज्ञानिक अभिवृत्ति।

आयामों का परिभाषीकरण

प्रथम आयाम – दैनिक जीवन में वैज्ञानिक अभिवृत्ति – इस शोध में इस आयाम से अभिप्राय: है कि माध्यमिक स्तर की किशोर छात्राएँ विद्यालय, आस-पड़ोस, समाज तथा अन्य स्थानों की दैनिक गतिविधियों में घट रही

घटनाओं में परम्परागत विचारों को, रुढ़ियों को, मान्यताओं को स्थान देने की अपेक्षा उनके प्रति विज्ञान के चरणों, विधियों, पद्धतियों आदि के अनुसार कैसे अपने विचार एवं मत अभिव्यक्त करती हैं।

द्वितीय आयाम – शिक्षण अधिगम में वैज्ञानिक अभिवृत्ति – इस शोध में इस आयाम से अभिप्राय: है कि माध्यमिक स्तर पर किशोर छात्राएँ शिक्षण अधिगम की विविध क्रियाओं, अनुक्रियाओं, अन्तक्रियाओं, तकनीकों, पद्धतियों आदि में किस तरह से वैज्ञानिक विचारधारा को अपनी विचारधारा से जोड़ती हैं तथा कक्षा-कक्ष शिक्षण में आने वाली समस्याओं का समाधान वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर निकालने का सार्थक प्रयास करती हैं।

तृतीय आयाम – अनौपचारिक वैज्ञानिक अभिवृत्ति – इस शोध में इस आयाम से अभिप्राय: है कि माध्यमिक स्तर पर छात्राएँ केवल पुस्तकीय विज्ञान के ज्ञान को आधार मानकर ही बात नहीं करती हैं बल्कि विज्ञान के सम्प्रत्ययों, अवधारणाओं, नियमों, सिद्धान्तों आदि का आत्मसातीकरण इस कोटि तक हो गया है कि वह दैनिक, औपचारिक, अनौपचारिक आदि सभी परिस्थितियों में अपने वैज्ञानिक नजरिये को कार्यप्रणाली के माध्यम से प्रस्तुत करने में समर्थ दिखाई देती है।

वैज्ञानिक अभिरुचि – इस शोध में किशोरावस्था की छात्राओं की वैज्ञानिक अभिरुचि को भी देखा गया है। जब उचित परिस्थितियों में छात्राएँ विज्ञान के विषय रूप में टेलीविजन के वैज्ञानिक कार्यक्रमों, विज्ञान की पत्र-पत्रिकाओं, विज्ञान क्लब, विज्ञान मेलों व विज्ञान परिषदों आदि में उत्साह से सक्रियता दर्शाती हैं एवं जीवनचर्चा में अधिकतम समय वैज्ञानिकता के चरणों पर केन्द्रित रहता है। उसका अभिप्राय इस शोध में वैज्ञानिक अभिरुचि से लिया गया है। अभिरुचि बालक-बालिका के भविष्य के बारे में सार्थक भविष्यवाणी करने में मददगार होती है चूँकि इससे ज्ञान, कौशल, अनुक्रियाओं आदि की जानकारी मिल जाती है।

अभिरुचि का अर्थ – अभिरुचि शब्द का प्रयोग संकुचि अर्थों में किया जाता है। लोग रुचिकर को मनोरंजन का पर्याय समझ लेते हैं। यह ठीक है कि जिस वस्तु में हमारी अभिरुचि है, वह हमें अच्छी लगती है, किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि जिस वस्तु में हम अभिरुचि ले रहे हैं, वह हमारे लिए मनोरंजक भी हो।

अभिरुचि शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ अभिरुचि एक आन्तरिक प्रेरक शक्ति है, जो हमें ध्यान देने के लिए किसी वस्तु, व्यक्ति या क्रिया के प्रति प्रेरित करती है। अभिरुचि एक मानसिक संरचना है, जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना लगाव या सम्बन्ध प्रकट करता है।

अभिरुचि की परिभाषा: अभिरुचि के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने परिभाषाएँ दी हैं।

1. **ड्रेवर के अनुसार** – “अभिरुचि अपने क्रियात्मक रूप में एक मानसिक संस्कार है।”
2. **मैकडूगल के अनुसार** – “अभिरुचि छिपा हुआ अवधान है और अवधान अभिरुचि का क्रियात्मक रूप है।”
3. **क्रो एण्ड क्रो के अनुसार** – “अभिरुचि वह प्रेरणा-शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु या

क्रिया की ओर

ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है।”

अभिरुचि के स्रोत – अभिरुचि के मुख्य रूप से दो स्रोत बताये गये हैं –

1. प्राकृतिक स्रोत
2. अर्जित स्रोत

1. **प्राकृतिक स्रोत** – इसके अन्तर्गत मूल प्रवृत्तियों, जन्मजात प्रेरणाएँ, आवश्यकताएँ, इच्छाएँ आती हैं, जिनके कारण व्यक्ति जन्म से ही, स्वाभाविक रूप से कुछ वस्तुओं में रुचि लेने लगता है। अभिरुचियों का प्रभाव व्यक्ति के विकास पर पड़ता है। व्यक्ति के विकास के साथ-साथ उसकी रुचियों में भी परिवर्तन होता जाता है।
2. **अर्जित स्रोत** – अभिरुचि का कारण अर्जित संस्कार भी होते हैं। आन्तरिक भावनाओं से जो अभिरुचि उत्पन्न होती है। वे अर्जित अभिरुचियाँ कहलाती हैं, अर्जित संस्कार के अन्तर्गत आदतें, स्थायी भाव, झुकाव और स्वभाव आते हैं। मानसिक विकास के साथ-साथ व्यक्ति की आदतों, स्थायी भावों तथा उसकी आवश्यकता के अनुसार उसकी अभिरुचियों का निर्माण होता है।

अभिरुचि के प्रकार

1. जन्मजात अभिरुचि
2. अर्जित अभिरुचि

1. **जन्मजात अभिरुचि** – मूल प्रवृत्ति जन्म अभिरुचि को जन्मजात अभिरुचि कहते हैं। जैसे खाने-पीने की अभिरुचि, बच्चों की खेलने में अभिरुचि आदि।
2. **अर्जित अभिरुचि** – ये अर्जित संस्कारों जैसे आदतों, स्थायी भाव, झुकाव तथा स्वभाव से उत्पन्न होती हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने अभिरुचियों के प्रकारों को ज्ञात करने के लिए अनेक अध्ययन किये हैं, इनमें सबसे महत्वपूर्ण अध्ययन गिलफोर्ड तथा उनके सहयोगियों का माना जाता है। उनके अध्ययनों से 33 अभिरुचियों के प्रकार ज्ञात हुए हैं। वास्तव में विभिन्न प्रकार की अभिरुचियाँ मानव-जीवन में विकसित होती रहती हैं, क्योंकि ये अर्जित की जा सकती हैं। अभिरुचियाँ स्थायी तथा परिवर्तनशील प्रकार की भी हो सकती हैं।

व्यक्ति में कुछ अभिरुचियाँ स्थायी प्रकार की होती हैं, तो कुछ परिवर्तनशील प्रकार की आयु, परिस्थिति तथा व्यक्ति एवं अभिरुचियों में परिवर्तन हो सकते हैं। अभिरुचियों के प्रारूप मुख्य से तीन प्रकार के होते हैं।

1. व्यक्त अभिरुचि
2. अभिव्यक्तात्मक अभिरुचि
3. परीक्षित अभिरुचि

वैज्ञानिक अभिरुचि प्रमापनी – प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के राजकीय, निजी तथा अनुदानित विद्यालयों की छात्राओं की वैज्ञानिक अभिरुचि ज्ञात करने हेतु एल.एन. दुबे तथा अर्चना दुबे (जबलपुर) द्वारा प्रमापीकृत प्रमापनी है का प्रयोग किया गया है। इस उपकरण में कुल 64 कथन हैं, जिन पर छात्राएँ को अपनी राय 'हाँ' अथवा 'नहीं' दोनों में से किसी एक पर सही निशान लगाकर देनी होती है। तत्पश्चात् उनकी राय का अंकन निम्नलिखित तरीके से किया जाता है।

कथन क्रमांक 1, 2, 4, 8, 14, 16, 18, 19, 21, 22, 29, 36, 38, 39, 42, 44, 46, 47, 48, 49, 50, 53, 56, 57, 58, 60, 61, 64 पर छात्राएँ यदि निशान लगाती हैं तो उसे एक अंक दिया जाता है अथवा शून्य

अंक दिया जाता है।

इसी प्रकार कथन क्रमांक 3, 5, 7, 9, 10, 11, 12, 13, 15, 17, 20, 23, 24, 26, 28, 30, 31, 32, 34, 35, 57, 40, 41, 43, 45, 51, 52, 54, 55, 59, 62, 63 पर छात्राएँ यदि हाँ पर सही का निशान लगाती है तो उसे एक अंक दिया जाता है। अन्यथा शून्य अंक दिया जाता है।

उपर्युक्त कथनों के प्राप्तांकों में जो छात्राएँ 56 से 52 के मध्य प्राप्तांक लाती है, उसे अत्यन्त उच्च वैज्ञानिक अभिरुचि की श्रेणी में रखा जाता है।

निष्कर्ष – निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि इस शोध में दो जिलों की छात्राओं की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं वैज्ञानिक अभिरुचि को देखा गया है। इसमें जयपुर एवं अजमेर जिले की छात्राओं में परस्पर तुलना की है। इसमें जयपुर जिले की छात्राओं में वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं वैज्ञानिक अभिरुचि अधिक पाई गई है। अजमेर जिले की अपेक्षा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. वर्मा, सुरेन्द्र कुमार (2007), – “सर्व शिक्षा अभियान के प्रति कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि का अध्ययन”, रा0उ0अ0शि0स0, अजमेर।
2. चर्च, एलन बूथ (1997) – “एक्टट्रेक्ट थिंकिंग रिकल्स इन किंडरगार्टन”, जर्मनी।
3. पाण्डेय, रामशकल (1998) “अभिरुचि”, शिक्षा मनोविज्ञान, आर, लाल बुक डिपो, मेरठ।